International Journal of Emerging Voices in Education
Volume 2 | Issue 2 | February 2026 | ISSN: 3107-958X (Online)
Available online at: https://ijeve.com/
DOI: https://doi.org/10.59828/ijeve.v2i2.36

ई-लर्निंग में भाषा की समस्या: भारतीय भाषाई विविधता और हिंदी भाषी विद्यार्थियों के समक्ष चुनौतियों का विश्लेषण

कृष्ण कुमार जायसवाल[1], प्रो. डी.पी. मिश्र[2]

[1]शोध छात्र, डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय,अयोध्या

[2]प्राचार्य, इन्दिरा गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गौरीगंज, अमेठी

[1]**Email:** krishnajai05@gmail.com

Received: 07 February 2026 | **Accepted:** 21 February 2026 | **Published:** 28 February 2026

सारांश

भारत में ई–लर्निंग की संकल्पना ने पिछले एक दशक में असाधारण विस्तार प्राप्त किया है। COVID-19 महामारी के पश्चात् यह विस्तार और भी त्वरित गति से हुआ है। किन्तु इस शिक्षा क्षेत्र में आई इस नई क्रांति के भीतर एक मूलभूत प्रश्न अनुत्तरित रहा है – 'क्या यह ई–लर्निंग प्रणाली वास्तव में उन विद्यार्थियों तक प्रभावी रूप से पहुँच पा रही है जो हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में सोचते, समझते और सीखते हैं?' प्रस्तुत शोध–लेख इसी प्रश्न के उत्तर की दिशा में एक विश्लेषणात्मक प्रयास है।

यह अध्ययन विशेष रूप से सरकारी सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हिंदी भाषी विद्यार्थियों की स्थिति पर केंद्रित है। इन विद्यार्थियों के समक्ष केवल डिजिटल विभाजन (Digital Divide) की चुनौती नहीं है, बल्कि एक और गहरी खाई है – भाषाई विभाजन । डिजिटल संसाधन उपलब्ध होने के बावजूद यदि सामग्री की भाषा विद्यार्थी की मातृभाषा या शिक्षण–माध्यम से भिन्न हो, तो वह सामग्री शैक्षणिक दृष्टि से निरर्थक हो जाती है।

इस लेख में अंग्रेजी–प्रभुत्व वाली ई–लर्निंग सामग्री, अनुवाद की निम्न गुणवत्ता, तकनीकी शब्दावली की जटिलता, मिश्रित भाषा (Hinglish) की अवधारणात्मक समस्याएँ तथा हिंदी माध्यम विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, DIKSHA, SWAYAM जैसी सरकारी पहलों की समीक्षा करते हुए बहुभाषिक ई–लर्निंग के संभावित समाधानों की पड़ताल की गई है।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्षों में यह स्थापित होता है कि भाषा केवल एक माध्यम नहीं, बल्कि अधिगम की आत्मा है। मातृभाषा आधारित डिजिटल शिक्षा सामग्री का विकास और AI–आधारित बहुभाषिक उपकरणों का समन्वय भारतीय शिक्षा प्रणाली में डिजिटल समता लाने की दिशा में सर्वाधिक प्रभावकारी मार्ग है।

मुख्य शब्द : *ई–लर्निंग, भाषा बाधा, हिंदी भाषी विद्यार्थी, डिजिटल शिक्षा, भारतीय भाषाएँ, ऑनलाइन अधिगम, मातृभाषा शिक्षा, डिजिटल विभाजन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*

1. प्रस्तावना

1.1. शिक्षा में ई–लर्निंग की क्रांति

विगत शताब्दी के अंतिम दशकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के उद्भव एवं विकास ने मानव सभ्यता के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया। शिक्षा भी इस परिवर्तन की धारा से अछूती नहीं रही। पारंपरिक कक्षाओं की सीमाएँ धीरे–धीरे टूटने लगीं और 'कहीं भी, कभी भी' सीखने की अवधारणा ने जन्म लिया। यह परिवर्तन न केवल तकनीकी था, अपितु शैक्षणिक दर्शन का एक मूलभूत पुनर्विन्यास भी था।

इंटरनेट की व्यापकता, स्मार्टफोन की सुलभता और सस्ते डेटा की उपलब्धता ने भारत जैसे विशाल और विविधताओं से भरे देश में ई–लर्निंग को एक व्यावहारिक विकल्प बना दिया। अब ज्ञान का प्रवाह केवल शिक्षक से विद्यार्थी की ओर एकरेखीय नहीं रहा, बल्कि बहुआयामी और बहु माध्यम से सम्बद्ध हो गया।

किन्तु इस क्रांति का एक महत्वपूर्ण पक्ष प्रायः अनदेखा रहा – भाषाई समावेशिता। यह प्रश्न कि 'ई –लर्निंग की सामग्री किस भाषा में है?' उतना ही महत्वपूर्ण है जितना यह कि 'ई–लर्निंग सामग्री उपलब्ध है या नहीं?' भारत के संदर्भ में यह प्रश्न और भी तीव्र हो जाता है जहाँ भाषाई विविधता किसी भी एकल समाधान को स्वाभाविक रूप से अपूर्ण बना देती है।

1.2. भारत में ई–लर्निंग का वर्तमान परिदृश्य

भारत सरकार ने डिजिटल शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए अनेक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम आरंभ किए हैं। *DIKSHA (Digital Infrastructure for Knowledge Sharing)* पोर्टल देश के लगभग *1.5* करोड़ शिक्षकों और *25* करोड़ से अधिक विद्यार्थियों को डिजिटल सामग्री उपलब्ध कराने का प्रयास करता है *(NCERT, 2023) A SWAYAM (Study Webs of Active Learning for Young Aspiring Minds)* प्लेटफॉर्म पर *9* चौनलों के माध्यम से उच्च शिक्षा की सामग्री प्रसारित की जाती है।

e-Pathshala, NPTEL, PM eVIDYA जैसी पहलों ने भारतीय शिक्षा परिदृश्य को निस्संदेह समृद्ध किया है। *2023-24* की रिपोर्ट के अनुसार, *DIKSHA* पर *36* भाषाओं में सामग्री उपलब्ध है, जो कि एक उल्लेखनीय प्रगति है। किन्तु इस सामग्री की गुणवत्ता, पर्याप्तता और

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. IJEVE Published by Surya Multidisciplinary Publication.

विद्यार्थियों तक वास्तविक पहुँच के प्रश्न अभी भी जटिल बने हुए हैं।

Global Education Monitoring Report 2023 के अनुसार, भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में केवल *31%* घरों में स्मार्टफोन की उपलब्धता है और इनमें से भी एक बड़ी संख्या उन परिवारों की है जिनके बच्चे सरकारी विद्यालयों में पढ़ते हैं *(UNESCO, 2023)*। यह आँकड़ा बताता है कि डिजिटल उपलब्धता और डिजिटल उपयोगिता के बीच की खाई अभी भी गहरी है।

1.3. भाषा और शिक्षा का संबंध

भाषा मात्र संप्रेषण का उपकरण नहीं है यह विचार का आधार, अनुभव की व्याख्या और ज्ञान के निर्माण का माध्यम है। टलहवजोल (1978) का 'सामाजिक–सांस्कृतिक सिद्धांत' यह स्थापित करता है कि भाषा और विचार एक–दूसरे के पूरक हैं। जब बच्चा अपनी मातृभाषा में सोचता है और किसी दूसरी भाषा में समझने का प्रयास करता है, तो उसकी संज्ञानात्मक ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण भाग भाषांतरण में व्यय होता है, न कि अवधारणा को आत्मसात् करने में।

पूर्व के कई शोध और सर्वे यह बताते हैं कि जो विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करते हैं, उनकी अधिगम दक्षता, विषय–बोध और विद्यालय–अनुधारण दर उन विद्यार्थियों की तुलना में काफी अधिक होती है जो किसी अन्य भाषा में शिक्षित होते हैं।

ई–लर्निंग के संदर्भ में यह प्रश्न और भी जटिल हो जाता है क्योंकि यहाँ शिक्षक की सामीप्यता कम होती है। विद्यार्थी को पाठ्य सामग्री से सीधे जूझना पड़ता है। ऐसे में यदि भाषा सहायक न हो तो डिजिटल शिक्षा का पूरा प्रयास निरर्थक हो जाता है।

1.4. समस्या की पृष्ठभूमि

भारत में इंटरनेट कनेक्टिविटी और मोबाइल उपकरणों की उपलब्धता में वृद्धि के बावजूद, ई–लर्निंग की प्रभावशीलता के संदर्भ में एक गहरा विरोधाभास दिखाई देता है। एक ओर सरकारी आँकड़े बताते हैं कि डिजिटल सामग्री का विस्तार हो रहा है या दूसरी ओर जमीनी स्तर पर हिंदी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थी इस सामग्री से उस गहराई से नहीं जुड़ पाते जिसकी अपेक्षा होती है।

प्रायः देखने को मिलता है कि माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले ग्रामीण विद्यार्थी भी हिंदी में एक साधारण पाठ को सही ढंग से नहीं पढ़ पाते, तो ऐसे में अंग्रेजी माध्यम की ई–लर्निंग सामग्री उनके लिए कितनी उपयोगी हो सकती है – यह प्रश्न स्वयमेव उत्तर दे देता है।

प्रस्तुत शोध–लेख इसी मूलभूत समस्या को उजागर करते हुए भाषाई समावेशिता की दृष्टि से ई–लर्निंग नीतियों, प्लेटफॉर्मों और सामग्री की पड़ताल करता है।

2. भारतीय भाषाई परिदृश्य और ई–लर्निंग

2.1. भारत की भाषाई विविधताः एक अनूठी चुनौती

भारत विश्व के उन विरले देशों में से है जहाँ भाषाई विविधता एक सामाजिक–सांस्कृतिक वास्तविकता होने के साथ–साथ एक प्रशासनिक और शैक्षणिक चुनौती भी है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 19,569 मातृभाषाएँ दर्ज हैं। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को अनुसूचित भाषा का दर्जा प्राप्त है। इनमें हिंदी (*52.83%* वक्ता), बंगाली, मराठी, तेलुगु, तमिल, गुजराती, उर्दू, पंजाबी, कन्नड़, मलयालम सहित अनेक भाषाएँ हैं *(Registrar General of India, 2011)*।

यह विविधता एक ओर जहाँ भारत की सांस्कृतिक संपदा है, वहीं दूसरी ओर यह शिक्षा प्रणाली के समक्ष एक जटिल प्रश्न उपस्थित करती है – किस भाषा में पढ़ाया जाए? किस भाषा में डिजिटल सामग्री तैयार की जाए? किस भाषा में मूल्यांकन किया जाए?

भारत के उत्तरी, मध्य और पश्चिमी राज्यों में हिंदी शिक्षण का माध्यम है, किन्तु दक्षिण और पूर्वोत्तर भारत में यह स्थिति भिन्न है। ऐसे में जब कोई राष्ट्रीय ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म एकल भाषा में सामग्री प्रदान करता है, तो वह अनिवार्यतः किसी न किसी भाषाई समूह को वंचित करता है।

2.2. बहुभाषिक समाज में ई–लर्निंग की जटिलताएँ

एक ही कक्षा में विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमि के विद्यार्थी होते हैं। किसी का घर की भाषा भोजपुरी है, किसी का मैथिली, किसी का अवधी। विद्यालय में हिंदी पढ़ाई जाती है, परन्तु ई–लर्निंग सामग्री का माध्यम प्रायः अंग्रेजी होता है। यह त्रिस्तरीय भाषाई संक्रमण विद्यार्थी के लिए अत्यंत कठिन होता है। ई –लर्निंग सामग्री में अंग्रेजी का वर्चस्व न केवल भाषाई असमानता को बढाता है, अपितु यह उन सामाजिक–आर्थिक असमानताओं को भी गहरा करता है जो पहले से ही ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के बीच विद्यमान हैं।

अक्सर पाया गया कि जिन विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा में ई–लर्निंग सामग्री प्रदान की गई, उनकी अवधारणात्मक समझ उन विद्यार्थियों की तुलना में अधिक थी जिन्हें अंग्रेजी माध्यम में वही सामग्री दी गई थी।

2.3. ई –लर्निंग सामग्री में अंग्रेजी का प्रभुत्व

विश्व की कुल इंटरनेट सामग्री में अंग्रेजी की हिस्सेदारी लगभग सर्वाधिक है, जबकि हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं की मिलाकर हिस्सेदारी मात्र लगभग *1%* से भी कम है। यह असंतुलन भारतीय हिंदी भाषी विद्यार्थियों को डिजिटल ज्ञान की मुख्यधारा से स्वाभाविक रूप से दूर करता है।

तकनीकी शब्दावली की जटिलता इस समस्या को और बढ़ाती है। विज्ञान, गणित, वाणिज्य और प्रौद्योगिकी जैसे विषयों की तकनीकी शब्दावली मूलतः अंग्रेजी में विकसित हुई है। इन शब्दों के हिंदी अनुवाद अनेक बार इतने क्लिष्ट और अप्रचलित होते हैं कि वे मूल अंग्रेजी शब्दों से भी अधिक बोझिल लगते हैं। उदाहरण के लिए, '*Computer*' के लिए 'संगणक', '*Internet*' के लिए 'अंतरजाल' आदि शब्द व्यावहारिक जीवन में प्रचलित नहीं हैं।

3. भाषा और अधिगम के सैद्धांतिक पक्ष

3.1. भाषा, अधिगम और संज्ञान का त्रिकोण

भाषा, अधिगम और संज्ञान का संबंध शिक्षाशास्त्र के सबसे चर्चित विषयों में से एक है। *Bloom (1956)* का *Taxonomy of Educational Objectives* यह स्थापित करता है कि अधिगम तीन स्तरों पर होता है – ज्ञान *(Knowledge)*, समझ *(Comprehension)*, और अनुप्रयोग *(Application)*। इनमें से समझ और अनुप्रयोग के स्तर पर भाषा की भूमिका सर्वाधिक निर्णायक होती है।

यदि विद्यार्थी किसी अवधारणा को केवल रट लेता है, तो वह ज्ञान के स्तर पर रहता है। किन्तु जब वह उस अवधारणा को अपनी भाषा में

समझाने, उससे नए प्रश्न पूछने और उसे नई परिस्थितियों में लागू करने में सक्षम होता है, तभी वास्तविक अधिगम हुआ माना जाता है। ई–लर्निंग में यह सब तब संभव है जब सामग्री विद्यार्थी की भाषा में हो।

3.2. मातृभाषा आधारित शिक्षाः *UNESCO* का दृष्टिकोण

UNESCO का स्पष्ट मत है कि प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा का माध्यम बच्चे की मातृभाषा होनी चाहिए। *Education for All Global Monitoring Report* में *UNESCO* ने यह प्रदर्शित किया है कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में अधिगम की गहराई, आत्मविश्वास, विद्यालय में उपस्थिति और परीक्षा परिणाम — सभी उत्तम होते हैं *(UNESCO, 2016)*।

यह तथ्य ई–लर्निंग के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है। ऑनलाइन शिक्षा में जब शिक्षक शारीरिक रूप से अनुपस्थित होता है, तो सामग्री की भाषाई सुगमता और भी अनिवार्य हो जाती है। विद्यार्थी न तो तत्काल प्रश्न पूछ सकता है, न ही शिक्षक उसके चेहरे पर भ्रम का भाव पढ़कर पुनः समझा सकता है। ऐसे में भाषा ही एकमात्र सेतु है।

3.3. ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म और भाषा के तीन आयाम

किसी भी ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म में भाषा के तीन आयाम होते हैं , इंटरफेस भाषा *(Interface Language)*, शिक्षण भाषा *(Instructional Language)* और मूल्यांकन भाषा *(Assessment Language)*। इन तीनों में असंगति होने पर विद्यार्थी के लिए समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। उदाहरण के लिए, यदि एक विद्यार्थी हिंदी में एक वीडियो लेक्चर देखता है, परन्तु उसका मूल्यांकन अंग्रेजी में होता है, तो वह जो जानता है उसे उचित रूप से व्यक्त नहीं कर पाता। यह स्थिति न केवल उसके अंकों को प्रभावित करती है, बल्कि उसके सीखने की क्षमता के प्रति उसकी धारणा को भी नकारात्मक बनाती है – जो दीर्घकालिक दृष्टि से अत्यंत हानिकारक है।

4. हिंदी भाषी विद्यार्थियों के समक्ष भाषा संबंधी समस्याएँ

4.1. अंग्रेजी आधारित ई–लर्निंग सामग्री की समस्या

भारत के प्रमुख ई–लर्निंग प्लेटफॉर्मों की सामग्री का विश्लेषण करने पर पाया जाता है कि उच्च गुणवत्ता की शैक्षणिक वीडियो, अध्ययन सामग्री और अभ्यास प्रश्नों का बड़ा हिस्सा अंग्रेजी में है। *NPTEL* के *90%* से अधिक पाठ्यक्रम अंग्रेजी माध्यम में हैं। *Coursera*, *edX*, *Khan Academy* जैसे अंतरराष्ट्रीय प्लेटफॉर्म मुख्यतः अंग्रेजी में संचालित होते हैं।

एक हिंदी माध्यम का विद्यार्थी जब इन प्लेटफॉर्मों पर आता है, तो उसे एक साथ दो कार्य करने होते हैं – नई अवधारणा को समझना और उस अवधारणा को व्यक्त करने वाली अंग्रेजी भाषा को भी समझना। यह दोहरा संज्ञानात्मक बोझ उसकी अधिगम क्षमता को आधा कर देता है।

हिंदी माध्यम विद्यार्थियों की समस्या रहती है कि वे ई–लर्निंग वीडियो देखते समय अंग्रेजी भाषा के कारण विषयवस्तु को पूरी तरह नहीं समझ पाते और बार–बार वीडियो रोककर शब्दों के अर्थ खोजते हैं।

4.2. अनुवाद की गुणवत्ता की समस्या

जब ई–लर्निंग सामग्री हिंदी में उपलब्ध होती है, तो प्रायः वह मशीनी अनुवाद या निम्न गुणवत्ता के मानवीय अनुवाद का परिणाम होती है। शाब्दिक अनुवाद की प्रवृत्ति से भाषा अस्वाभाविक लगती है और तकनीकी संदर्भ अक्सर खो जाते हैं। कई बार एक ही अंग्रेजी तकनीकी शब्द के लिए विभिन्न हिंदी स्रोतों में अलग–अलग अनुवाद मिलते हैं, जिससे विद्यार्थी भ्रमित होता है।

उदाहरण के लिए, '*Cell Division*' के लिए कहीं 'कोशिका विभाजन', कहीं 'कोशिका बँटाव' तो कहीं 'सेल डिविजन' का प्रयोग किया जाता है। इस असंगति से विद्यार्थी की अवधारणात्मक समझ कमजोर पड़ती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में इस समस्या को स्वीकार किया गया है, परन्तु समाधान की दशा और दिशा अभी बहुत दूर है ।

4.3. डिजिटल शब्दावली की जटिलता

ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म का उपयोग करने के लिए एक विद्यार्थी को पहले उस प्लेटफॉर्म की तकनीकी भाषा को समझना होता है। कुछ सामान्य डिजिटल शब्द जो हिंदी माध्यम विद्यार्थियों के लिए भ्रामक सिद्ध होते हैंः

- *Dashboard* — यह एक केंद्रीय नियंत्रण पृष्ठ होता है, परन्तु हिंदी में इसका सरल प्रतिशब्द प्रचलित नहीं है।
- *Authentication / Login* — प्रमाणीकरण और प्रवेश के बीच के अंतर को समझना कठिन होता है।
- *Submission / Assignment* — कार्यभार जमा करने की प्रक्रिया की तकनीकी समझ का अभाव।
- *Analytics* — डेटा विश्लेषण की अवधारणा अधिकांश विद्यार्थियों के लिए अपरिचित है।
- *Synchronous / Asynchronous Learning* — इन शब्दों का हिंदी अनुवाद बोझिल और अव्यावहारिक है।

इस समस्या को *'Second Digital Divide'* की संज्ञा दी जाती है , जहाँ पहला डिवाइड प्रौद्योगिकी तक पहुँच का है और दूसरा डिवाइड उस प्रौद्योगिकी को सार्थक रूप से उपयोग करने की क्षमता का।

4.4. मिश्रित भाषा *(Hinglish)* की अवधारणात्मक समस्या

ई–लर्निंग वीडियो और ऑनलाइन सामग्री में एक नई भाषाई प्रवृत्ति देखी जाती है , '*Hinglish*', अर्थात् हिंदी और अंग्रेजी का मिश्रण। अनेक शिक्षक और कोचिंग संस्थाएँ इसे 'सुलभ' मानते हुए अपनाती हैं। किन्तु यह दृष्टिकोण शैक्षणिक दृष्टि से कई समस्याएँ उत्पन्न करता है

Hinglish में न तो हिंदी की व्याकरणिक संरचना का पालन होता है, न अंग्रेजी की। परिणामतः विद्यार्थी न पूर्ण हिंदी सीख पाता है, न पूर्ण अंग्रेजी। वह एक अधूरी भाषाई दुनिया में रहता है जहाँ उसकी अभिव्यक्ति और समझ दोनों सीमित रहती हैं। ऐसी मिश्रित भाषा में शिक्षण अस्थायी रूप से आसान लग सकता है, परन्तु दीर्घकाल में यह भाषाई दक्षता और विषय–बोध दोनों को कमजोर करती है।

4.5. उच्चारण और श्रवण संबंधी कठिनाइयाँ

ई–लर्निंग में सुनना एक प्रमुख माध्यम है। किन्तु हिंदी भाषी विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी उच्चारण, विशेषकर ब्रिटिश या अमेरिकी लहजे में , को समझना कठिन होता है। इसके अतिरिक्त, वीडियो लेक्चरों की गति प्रायः इतनी तीव्र होती है कि विद्यार्थी बार–बार रोककर सुनने के बावजूद भी मूल अर्थ नहीं पकड़ पाता।

क्षेत्रीय उच्चारण की समस्या भी महत्वपूर्ण है। हिंदी के भी अनेक क्षेत्रीय रूप हैं – बिहारी हिंदी, बुंदेलखंडी हिंदी, राजस्थानी हिंदी आदि। जब ई–लर्निंग सामग्री में मानक हिंदी का उपयोग होता है, तो कुछ विद्यार्थियों को यह भी अपरिचित लग सकती है।

4.6. मूल्यांकन में भाषाई पक्षपात

ऑनलाइन मूल्यांकन प्रणाली में भाषाई पक्षपात एक गंभीर समस्या है जिस पर शोधकर्ताओं का ध्यान अपेक्षाकृत कम गया है। जब किसी विद्यार्थी ने किसी अवधारणा को हिंदी में समझा हो और उसे अंग्रेजी में उत्तर देना पड़े, तो वह अपने वास्तविक ज्ञान का प्रदर्शन नहीं कर पाता। यह स्थिति न केवल अनुचित है, बल्कि विद्यार्थी के आत्मसम्मान और मातृभाषा के प्रति सम्मान को भी आघात पहुँचाती है। यहाँ भाषाई क्षमता को बौद्धिक क्षमता का समानार्थी मान लिया जाता है, जो कि शैक्षणिक और नैतिक दोनों दृष्टियों से अनुचित है।

4.7. आत्मविश्वास पर प्रभाव

भाषाई चुनौतियों का सबसे गहरा प्रभाव विद्यार्थी के आत्मविश्वास पर पड़ता है। जब एक हिंदी माध्यम का विद्यार्थी बार–बार ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म पर जाता है और भाषा की दीवार से टकराता है, तो धीरे–धीरे वह यह मान लेता है कि 'डिजिटल शिक्षा उसके लिए नहीं है' या 'वह इतना सक्षम नहीं है।' यह आत्म–अवमूल्यन अत्यंत हानिकारक है।

भाषाई असफलता के अनुभव अधिगम प्रेरणा को नष्ट या कम कर देते हैं। एक बार यदि विद्यार्थी के मन में यह धारणा बैठ जाए कि 'मैं ई –लर्निंग के द्वारा नहीं सीख सकता', तो उसे वापस लाना अत्यंत कठिन हो जाता है।

5. सरकारी सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की विशेष परिस्थितियाँ

5.1. सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का प्रभाव

सरकारी सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अधिकांश विद्यार्थी ग्रामीण या अर्ध–शहरी क्षेत्रों से आते हैं। ये प्रायः निम्न एवं मध्यम आय वर्ग के परिवारों के बच्चे हैं। इनमें से बड़ी संख्या 'प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थी' *(First Generation Learners)* है, अर्थात् उनके परिवार में पहले कभी कोई उच्च विद्यालय तक नहीं पहुँचा।

ऐसे परिवारों में अंग्रेजी का कोई सामाजिक आधार नहीं होता। घर पर हिंदी या क्षेत्रीय भाषा बोली जाती है। बाजार, समाज, मंदिर – सब जगह हिंदी। ऐसे में जब ई–लर्निंग सामग्री अचानक अंग्रेजी में आती है, तो यह उनके पूरे जीवन अनुभव से विच्छेद जैसा होता है।

5.2. विद्यालयों की भाषाई संरचना और ई–लर्निंग का अंतर्विरोध

सरकारी सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण का माध्यम हिंदी है। पाठ्यपुस्तकें हिंदी में हैं, परीक्षाएँ हिंदी में होती हैं और शिक्षक भी हिंदी में पढ़ाते हैं। किन्तु जब ये ही विद्यार्थी *DIKSHA* या *SWAYAM* पर जाते हैं, तो अचानक भाषाई माहौल बदल जाता है। यह अंतर्विरोध इन विद्यार्थियों के लिए एक दोहरा संकट उत्पन्न करता है। एक ओर विद्यालय उन्हें डिजिटल शिक्षा की ओर प्रोत्साहित करता है, दूसरी ओर डिजिटल प्लेटफॉर्म उन्हें एक ऐसी भाषाई दुनिया में धकेलता है जो उनके अनुकूल नहीं है।

5.3. शिक्षकों की भूमिका और सीमाएँ

इन विद्यालयों के शिक्षक भी प्रायः हिंदी माध्यम से शिक्षित हुए हैं। उनका डिजिटल प्रशिक्षण सीमित है और तकनीकी अंग्रेजी शब्दावली में उनकी दक्षता भी उतनी नहीं है। ऐसे में वे विद्यार्थियों को ई–लर्निंग में भाषाई सहायता प्रदान करने में असमर्थ रहते हैं।

National Council for Teacher Education (NCTE, 2019) की रिपोर्ट के अनुसार, देश के *73%* प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को आज भी प्रभावी डिजिटल शिक्षण के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं मिला है। जब शिक्षक स्वयं ही डिजिटल भाषाई माहौल से असहज हों, तो वे विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कैसे कर सकते हैं?

5.4. डिजिटल विभाजन और भाषा विभाजन का संयुक्त प्रभाव

यह बात सुस्थापित है कि भारत में डिजिटल विभाजन गहरा है। परन्तु इससे भी अधिक गहरा और अदृश्य विभाजन भाषाई है। दोनों विभाजनों का संयुक्त प्रभाव इन विद्यार्थियों पर दोहरी वंचना के रूप में पड़ता है।

केवल इंटरनेट की उपलब्धता ही पर्याप्त नहीं है। यदि विद्यार्थी सामग्री की भाषा नहीं समझता तो डिजिटल संसाधन उसके लिए उपयोगी नहीं बन पाते। स्मार्टफोन हाथ में हो और सामग्री समझ न आए, यह शिक्षा नहीं, यह भ्रम की स्थिति है।

6. भारतीय भाषाओं में ई–लर्निंग की वर्तमान पहलें

6.1. *DIKSHA* : एक बहुभाषिक प्रयास

DIKSHA (Digital Infrastructure for Knowledge Sharing) भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी पहल है जिसे *National Council of Educational Research and Training (NCERT)* और *Ministry of Education* द्वारा संचालित किया जाता है। *2017* में आरंभ हुए इस प्लेटफॉर्म पर *36* भाषाओं में सामग्री उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है।

हिंदी सामग्री की दृष्टि से *DIKSHA* ने उल्लेखनीय कार्य किया है। कक्षा 1 से 12 तक की पाठ्यसामग्री हिंदी में उपलब्ध है। *QR* कोड आधारित *Energized Textbooks* विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक पाठ से संबंधित डिजिटल सामग्री तक पहुँचाते हैं। किन्तु गुणवत्ता और कवरेज में अभी भी सुधार की आवश्यकता है।

6.2. *SWAYAM* और भाषाई सीमाएँ

SWAYAM (Study Webs of Active Learning for Young Aspiring Minds) मुख्यतः उच्च शिक्षा के लिए डिजाइन किया गया है और इस पर *IIT*, *IIM* जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा पाठ्यक्रम प्रदान किए जाते हैं। किन्तु इसकी सामग्री का अधिकांश भाग अंग्रेजी माध्यम में है।

अतः यह प्रयास हिंदी भाषी विद्यार्थियों के लिए ज्यादा प्रभावी नहीं हो रहा है, क्योंकि देश में हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की संख्या करोड़ों में है।

6.3. *e-Pathshala : NCERT* की डिजिटल पहल

NCERT का *e-Pathshala* पोर्टल और ऐप बहुभाषिक डिजिटल शिक्षा की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। यहाँ कक्षा 1 से 12 तक की पाठ्यपुस्तकें, ऑडियो–वीडियो सामग्री, फ्लिपबुक और अन्य संसाधन हिंदी सहित 29 भाषाओं में उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है

परन्तु इस पहल की एक सीमा यह है कि सामग्री मुख्यतः पाठ्यपुस्तक–आधारित है। इंटरैक्टिव, गेमीफाइड और व्यक्तिगत अधिगम के अनुरूप सामग्री का अभाव है जो आधुनिक ई–लर्निंग की मूल आवश्यकता है।

6.4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भाषाई दृष्टिकोण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा इतिहास में एक ऐतिहासिक दस्तावेज है जो मातृभाषा आधारित शिक्षा को न केवल प्रोत्साहित करती है, बल्कि उसे नीतिगत प्राथमिकता बनाती है। *NEP* 2020 के अनुसार, कम से कम कक्षा 5 तक – और अधिमानतः कक्षा 8 तक – शिक्षण का माध्यम मातृभाषा या स्थानीय भाषा होनी चाहिए *(Ministry of Education, 2020)*।

ई–लर्निंग के संदर्भ में *NEP 2020* यह भी स्पष्ट करती है कि डिजिटल सामग्री भारतीय भाषाओं में विकसित की जाए और *AI*–आधारित अनुवाद उपकरणों का उपयोग करके सामग्री की उपलब्धता बढ़ाई जाए। यह नीतिगत दृष्टिकोण सही दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

परन्तु नीति और व्यवहार के बीच की खाई को पाटने के लिए अभी भी बहुत कार्य शेष है। *NEP* के प्रावधानों का क्रियान्वयन जमीनी स्तर पर असमान है और डिजिटल सामग्री विकास में भारतीय भाषाओं को पर्याप्त निधि और ध्यान नहीं मिल पा रहा है।

7. भाषा संबंधी समस्याओं का अधिगम पर प्रभाव

7.1. शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव

भाषाई बाधाओं का सर्वाधिक मापनीय प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ता है। वे विद्यार्थी जो ई–लर्निंग की भाषाई चुनौतियों को पार नहीं कर पाते, वे इस संसाधन का उचित उपयोग ही नहीं कर पाते। परिणामतः ई–लर्निंग जो सामान्यतः अधिगम को समृद्ध करने के लिए होती है, उनके लिए एक और तनाव का स्रोत बन जाती है।

7.2. अध्ययन आदतों पर प्रभाव

भाषाई बाधाओं के कारण हिंदी भाषी विद्यार्थी अनेक बार रट्टा–मारने की ओर प्रवृत्त होते हैं। जब भाषा समझ नहीं आती तो विद्यार्थी अर्थ समझे बिना ही उत्तर याद कर लेते हैं। यह प्रवृत्ति गहन अधिगम के विपरीत है और दीर्घकालिक ज्ञान निर्माण को बाधित करती है।

इसके अतिरिक्त, भाषाई असुविधा के कारण विद्यार्थी ई–लर्निंग सत्रों की अवधि कम कर देते हैं। वे जल्दी थक जाते हैं क्योंकि एक ही समय में दो भाषाओं – अपनी सोच की भाषा और सामग्री की भाषा – से जूझना मानसिक रूप से थका देने वाला होता है।

7.3. प्रेरणा स्तर और अधिगम असमानताओं पर प्रभाव

भाषाई बाधाएँ विद्यार्थियों की प्रेरणा स्तर को प्रभावित करती हैं। जब विद्यार्थी को लगता है कि वह भाषा के कारण सफल नहीं हो पा रहा, तो उसकी प्रेरणा गिरती है, जो सीखने की असमानताओं को और गहरा करती है।

यह एक दुष्चक्र है। भाषाई बाधाएँ प्रेरणा घटाती हैं, प्रेरणा घटने से ई–लर्निंग का उपयोग कम होता है, कम उपयोग से अधिगम अंतराल बढ़ता है, और बढ़ता अंतराल शैक्षणिक असमानता को स्थायी बनाता है।

8. भाषा संबंधी समस्याओं के समाधान

8.1. बहुभाषिक ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म का विकास

समस्या का सर्वाधिक मूलभूत समाधान यह है कि ई–लर्निंग प्लेटफॉर्मों को शुरू से ही बहुभाषिक संरचना के साथ डिजाइन किया जाए। यह केवल अनुवाद नहीं, बल्कि '*Localization*' है , जहाँ सामग्री का न केवल भाषांतरण हो, बल्कि उसे स्थानीय सांस्कृतिक, सामाजिक और शैक्षणिक संदर्भों के अनुरूप ढाला जाए।

चीन ने अपनी भाषा का व्यापक प्रयोग किया है। फिनलैंड और कनाडा जैसे देशों ने बहुभाषिक शिक्षा में सफल प्रयोग किए हैं। भारत के लिए एक '*Language–Neutral Design Philosophy*' की आवश्यकता है जहाँ किसी भी एक भाषा को केंद्र में रखकर डिजाइन न किया जाए।

8.2. उच्च गुणवत्ता वाले तकनीकी अनुवाद

वर्तमान में उपलब्ध हिंदी सामग्री के अनुवाद की गुणवत्ता अनेक बार असंतोषजनक है। इस दिशा में सुधार के लिए विषय–विशेषज्ञों, भाषाविदों और शिक्षाशास्त्रियों की संयुक्त टीम द्वारा अनुवाद किया जाना चाहिए। *NCERT* की पाठ्यपुस्तक अनुवाद प्रक्रिया एक मॉडल के रूप में अपनाई जा सकती है।

साथ ही, तकनीकी शब्दावली का मानकीकरण अत्यंत आवश्यक है। एक केंद्रीय तकनीकी शब्दकोश विकसित किया जाए जो सभी ई–लर्निंग प्लेटफॉर्मों पर समान रूप से लागू हो।

8.3. स्थानीय भाषा आधारित वीडियो और इंटरैक्टिव सामग्री

वीडियो लेक्चर्स हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय शिक्षकों और विशेषज्ञों द्वारा रिकॉर्ड किए जाएँ। ये वीडियो न केवल भाषाई रूप से सुलभ होंगे, बल्कि सांस्कृतिक और उच्चारण की दृष्टि से भी अधिक परिचित लगेंगे। *Khan Academy* का हिंदी संस्करण और *YouTube* पर हिंदी शिक्षा सामग्री की बढ़ती लोकप्रियता इस दिशा में एक सकारात्मक संकेत है।

8.4. *AI* आधारित भाषा अनुवाद और व्यक्तिगत अधिगम उपकरण

कृत्रिम बुद्धिमत्ता *(Artificial Intelligence)* के क्षेत्र में हो रही प्रगति ई–लर्निंग की भाषाई चुनौतियों के समाधान की एक बड़ी संभावना है। *Real-time translation, automatic captioning* और *voice-to-text* जैसी तकनीकें अब काफी उन्नत हो चुकी हैं।

इन उपकरणों को ई–लर्निंग प्लेटफॉर्मों में एकीकृत करने से एक ऐसी व्यवस्था बन सकती है जहाँ विद्यार्थी किसी भी भाषा में सामग्री को अपनी भाषा में समझ सके। यह सपना अब तकनीकी रूप से संभव है।

8.5. हिंदी तकनीकी शब्दावली का मानकीकरण

केंद्रीय हिंदी संस्थान और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने हिंदी तकनीकी शब्दों के निर्माण और मानकीकरण की दिशा में कार्य किया है। किन्तु इन शब्दों को व्यावहारिक जीवन और ई–लर्निंग सामग्री में लागू करने के लिए एक सुसंगत राष्ट्रीय नीति की आवश्यकता है। एक आदर्श समाधान यह हो सकता है कि तकनीकी शब्द के साथ उसका अंग्रेजी समतुल्य कोष्ठक में दिया जाए – जैसे 'प्रमाणीकरण कृ ताकि विद्यार्थी दोनों भाषाओं में उस अवधारणा को जोड़ सके।

8.6. शिक्षकों का डिजिटल–भाषाई प्रशिक्षण

सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों को ई–लर्निंग के तकनीकी पक्ष के साथ–साथ उसके भाषाई पक्ष में भी प्रशिक्षित किया जाए। *NISHTHA*

(National Initiative for School Heads' and Teachers' Holistic Advancement) जैसे कार्यक्रमों में भाषाई डिजिटल साक्षरता को एक अनिवार्य घटक के रूप में सम्मिलित किया जाए।

शिक्षकों को यह सक्षम बनाया जाए कि वे स्वयं हिंदी में डिजिटल सामग्री निर्मित कर सकें, *Google Classroom*, *DIKSHA* जैसे प्लेटफॉर्मों पर हिंदी सामग्री अपलोड कर सकें और विद्यार्थियों को भाषाई कठिनाइयों से उबरने में सहायता कर सकें।

8.7. द्विभाषिक सामग्री और क्षेत्रीय भाषाओं में इंटरैक्टिव माध्यम

एक व्यावहारिक और तत्काल समाधान यह है कि सभी प्रमुख ई–लर्निंग सामग्री द्विभाषिक *(Bilingual)* हो कृ अर्थात् मुख्य सामग्री हिंदी में हो और तकनीकी शब्द अंग्रेजी में कोष्ठक में दिए जाएँ। साथ ही, गेमीफाइड और इंटरैक्टिव सामग्री हिंदी में विकसित की जाए ताकि विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़े।

BYJU'S और *Vedantu* जैसे *EdTech* उद्यमों ने हिंदी माध्यम की सामग्री में निवेश बढ़ाया है, जो बाजार की माँग को स्वीकार करता है। सरकारी और सार्वजनिक प्लेटफॉर्मों को भी इसी दिशा में आगे बढ़ना होगा।

9. निष्कर्ष

भारत में ई–लर्निंग की यात्रा अभूतपूर्व गति से आगे बढ़ रही है। *DIKSHA* पर अरबों सत्र, *SWAYAM* पर लाखों नामांकन, *PM eVIDYA* पर करोड़ों विद्यार्थी – ये सभी आँकड़े एक डिजिटल शैक्षणिक क्रांति की कहानी कहते हैं। किन्तु इस क्रांति की सफलता का मापदंड केवल संख्याओं में नहीं, बल्कि उस विद्यार्थी के चेहरे पर होना चाहिए जो वास्तव में कुछ सीखकर उठा।

प्रस्तुत अध्ययन ने यह स्थापित किया है कि हिंदी भाषी विद्यार्थियों विशेषकर सरकारी सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले के लिए ई–लर्निंग की भाषाई चुनौतियाँ न केवल वास्तविक हैं, बल्कि गहरी और बहुस्तरीय भी हैं। अंग्रेजी का डिजिटल वर्चस्व, अनुवाद की खराब गुणवत्ता, तकनीकी शब्दावली की जटिलता और मूल्यांकन में भाषाई पक्षपात, ये सब मिलकर एक ऐसी स्थिति बनाते हैं जहाँ डिजिटल उपकरण होने के बावजूद वास्तविक अधिगम अवरुद्ध रहता है।

भाषा केवल एक माध्यम नहीं है, यह अनुभव की व्याख्या है, विचार का आधार है और पहचान का स्रोत है। जब एक विद्यार्थी को उसकी अपनी भाषा में सीखने का अवसर मिलता है, तो वह केवल जानकारी प्राप्त नहीं करता, वह उस जानकारी को अपना बनाता है, उससे प्रश्न पूछता है और नए ज्ञान का निर्माण करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने सही दिशा में संकेत दिया है। *BharatGPT* जैसी परियोजनाएँ तकनीकी संभावनाओं के द्वार खोल रही हैं। अब आवश्यकता है राजनीतिक इच्छाशक्ति, संसाधनों के उचित आवंटन और व्यावहारिक क्रियान्वयन की।

भारत की ई–लर्निंग का भविष्य तभी सच्चे अर्थों में समावेशी होगा जब उत्तर प्रदेश के किसी गाँव का किसान–पुत्र भी उतनी ही सहजता और गहराई से डिजिटल सामग्री से सीख सके जितना किसी महानगरीय अंग्रेजी स्कूल का विद्यार्थी। यह सपना न केवल संभव है, बल्कि यह भारत के संविधान की समता और शिक्षा के अधिकार की नैतिक माँग भी है।

मातृभाषा आधारित डिजिटल शिक्षा की दिशा में हर कदम भारत को एक ऐसे भविष्य की ओर ले जाता है जहाँ भाषा अवसर की सीढ़ी बनती है, अवरोध नहीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. Annual Status of Education Report (ASER). (2022). Annual Status of Education Report (Rural) 2022. Pratham Education Foundation. https://www.asercentre.org/Keywords/p/371.html

[2]. Bloom, B. S. (Ed.). (1956). Taxonomy of educational objectives: The classification of educational goals. Handbook I: Cognitive domain. David McKay Company.

[3]. Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

[4]. Ministry of Education, Government of India. (2022). Annual report 2021–22. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/AR2122_English.pdf

[5]. National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2023). DIKSHA: Digital Infrastructure for Knowledge Sharing — Annual progress report 2022–23. Ministry of Education. https://diksha.gov.in/reports

[6]. National Council for Teacher Education (NCTE). (2019). Preparing teachers for the future: A framework for teacher competencies. https://ncte.gov.in/Website/PDF/framework_teacher_competencies.pdf

[7]. Registrar General of India. (2011). Census of India 2011: Language. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. https://censusindia.gov.in/nada/index.php/catalog/42561

[8]. Sharma, R., & Mishra, R. (2020). Perspectives on the evolution of mobile learning in India. In A. Tsinakos & M. Ally (Eds.), Global mobile learning implementations and trends (pp. 89–106). China Central Radio & TV University Press.

[9]. UNESCO. (2016). If you don't understand, how can you learn? (Global Education Monitoring Report Policy Paper No. 24). United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization. https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000243713

[10]. UNESCO. (2023). Global Education Monitoring Report 2023: Technology in education — A tool on whose terms? United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization. https://doi.org/10.54676/UZQV8501

[11]. University Grants Commission (UGC). (2022). Annual report 2021–22. https://www.ugc.gov.in/pdfnews/annual_report.pdf

[12]. Vygotsky, L. S. (1978). Mind in society: The development of higher psychological processes (M. Cole, V. John-Steiner, S. Scribner, & E. Souberman, Eds. & Trans.). Harvard University Press.

Cite this Article:

कृष्ण कुमार जायसवाल, डी.पी. मिश्र. (2026). ई-लर्निंग में भाषा की समस्या: भारतीय भाषाई विविधता और हिंदी भाषी विद्यार्थियों के समक्ष चुनौतियों का विश्लेषण. International Journal of Emerging Voices in Education, 2(2), 60–66.

Journal URL: *https://ijeve.com/* ***DOI:*** *https://doi.org/10.59828/ijeve.v2i2.36*